

**सेंजना सब्जी के साथ औषधि उपयोग: एक लाभकारी वृक्ष**

**मोती लाल मीणा, धीरज सिंह, महेन्द्र चौधरी एवं पी.के. तोमर**

**भाकृअनुप-काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली-मारवार (राजस्थान)-306401**

सेंजना पौष्टिकता से भरपूर बहुउद्देशीय वृक्ष है। सेंजना के वृक्ष का प्रत्येक भाग (जड़, छाल, तना, पत्तियाँ, फल-फूल, बीज, तेल तथा गोंद) किसी न किसी रूप में मनुष्यों एवं जानवरों द्वारा खाया अथवा उपयोग में लाया जाता है। आयुर्वेद में सेंजना का उपयोग प्राचीन समय से चला आ रहा है। पौष्टिकता से भरपूर होने के कारण इससे विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाये जाने लगे हैं। यदि इस पौधे का प्रत्येक घर या परिवार में विधिवत उपयोग किया जाये तो यह कुपोषण की समस्या का समाधान करने में अहम भूमिका निभा सकता है। इन दिनों सहंजना की फुलों वाली टहनीयाँ बाजारों में आसानी से देखने को मिल जाती है। सहंजना की कच्ची हरी-मुलायम फलियाँ सब्जी के रूप में सर्वाधिक उपयोग में लायी जाती है। इनकी फलियों में अन्य सब्जियों व फलों की तुलना में विटामिन, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, एमीनो एसिड व खनिज पदार्थ अधिक होते हैं। इसकी पत्तियाँ व फूल भी विभिन्न पोषक तत्वों का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। जिनमें विटामिन बी, सी व बीटा कैरोटीन, मैंगनीज तथा प्रोटीन प्रचुरता से पाये जाते हैं। फलियों के बीजों से प्राप्त तेल में जैतून के तेल से भी ज्यादा प्रभावशाली गुण होते हैं। इस प्रकार इस पौधे का फल, फूल, पत्ते, तना और यहाँ तक कि जड़ भी उपयोगी है।

**औषधीय उपयोग:-**

**घाव भरने में:-**

चोट के कारण घाव हो जाने, खरोंच लग जाने पर इसकी पत्तियों को कूटकर गीला करके सरसों के तेल के साथ पट्टी बांधने से घाव जल्दी भर जाता है। यदि घाव से रक्त निकल रहा है तो इसकी पत्तियों को महीन पीस कर घाव के उपर लगाने से रक्त का बहना बन्द हो जाता है।

## **दर्द व सूजन रोधी:-**

शरीर के विभिन्न जोड़ों में उम्र बढ़ने के साथ ही या चोट के कारण या अधिक कार्य करने से आई सूजन व दर्द को संहजना के सेवन से काफी हद तक कम किया जा सकता है। इस हेतु इसका तेल भी मालिश के लिए लाभकारी हैं। छोटे बच्चों के शरीर पर मालिश करने से उनकी त्वचा रोग रहित होती है और खुजली का प्रकोप नहीं होता है।

## **अंधता निवारण में:-**

संहजना विटामिन "ए" का अच्छा स्रोत है जिसे शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब लोगों खासकर बच्चों हेतु विटामिन "ए" के सस्ते व अच्छे स्रोत के रूप में अंधता दूर करने हेतु उपयोग किया जा सकता है।

## **हड्डियों की बीमारियों में:-**

संहजना में कैल्शियम व पोटेशियम की अधिकता होने से मानव हड्डियों की बीमारियों जैसे ऑस्टियो-पोरोसिस को रोकने व हड्डियों के विकास में अति उपयोगी है।

## **महिला सुपोषण हेतु उपयोगी:-**

दूनिया के अनेक भागों में, बच्चों के सुपोषित लालन-पालन और पूरे परिवार को स्वस्थ रखने के लिए इसे माँ के सबसे अच्छे पोषक मित्र के रूप में जाना जाता है। गर्भवति महिलाओं व दुग्धपान कराने वाली माताओं हेतु यह कैल्शियम व पोटेशियम के साथ ही विटामिन ए व अन्य पोषक तत्वों से भरपूर प्राकृतिक स्रोत है।

## **और भी हैं गुण:-**

उपरोक्त के अलावा गैस्ट्रिक, अल्सर, ब्लड प्रेशर, ब्लड शूगर व तंत्रिका तंत्र को प्रभावी बनाने, मस्तिष्क की कार्यक्षमता बढ़ाने, त्वचा में निखार लाने आदि हेतु भी उपयोगी है। इसकी छाल का उपयोग पशुओं के सींग टूटने पर बाँधने पर आराम मिलता है।

## संहजना का उपयोग कैसे करे:-

औषधिक सेवन के अतिवृत्ति इसे सब्जी (फूल व फलियाँ), सूप (फलियाँ व फूल), चूरन (पत्तियाँ व दाने), चटनी (फूल), अचार (फलियाँ) आदी के रूप में खाया जा सकता है। इन सबके अलावा संहजना की पत्तियाँ शुष्क क्षेत्रों में भेड़, बकरी, गाय व भैंस के चारे के रूप में खिलाई जाती है जिससे दूधारू पशुओं का दूध बढ़ता है।

## कैसे उगाएं:-

यह पौधा शुष्क व अर्द्धशुष्क दशाओं में आसानी से उगाया जा सकता है। इस पौधे को उगाने हेतु उन्नत प्रजाती के संहजना के किसी हरे पौधे की डाल को काटकर या नया पौधा रोपित कर उगाया जा सकता है। वर्षा ऋतु में इसकी 4-6 फुट लम्बाई वाली हाथ की कलाई से अधिक मोटी डालियों को काटकर पूर्व से तैयार (पकी गोबर व भुरभुरी मिट्टी भरे) 1ग1ग1 फुट के गड्ढों में इस प्रकार रोपते हैं, कि भविष्य में 4-6 माह तक उनके किसी भी प्रकार से हिलाने व उखड़ने की सम्भावना न रहे। अर्थात् सुरक्षित स्थान पर रोपते हैं। ऊपरी हिस्से को सूखने से बचाने हेतु पशुओं के गोबर से ढककर पाफलिथीन/कपड़े से बांध देते हैं। तथा आवश्यक सिंचाई करते रहते हैं। इस विधि से तैयार पौधा प्रथम वर्ष से ही कुछ न कुछ फलन देना शुरू कर देता है। नर्सरी से प्राप्त नए पौधों को उपरोक्त गड्ढों में सुरक्षित रोपकर लगभग दो साल बाद पौधा तैयार हो जाता है। इस प्रकार बहुत थोड़े प्रयास में ही बहुपयोगी पोषक तत्वों के साथ ही स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

## उपयोगिता:-

### पत्तियाँ एवं फूल:-

संहजना की पत्तियाँ एवं फूलों में पोषक तत्वों की प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इनको भोजन के साथ पूरक रूप में खाने पर यह बच्चों, गर्भवती स्त्रियों, नवजात शिशुओं की माताओं आदि के लिए आदर्श भोजन माना गया है। इसमें सभी प्रकार के वृहद एवं सूक्ष्म तत्व, विटामिन्स, एंटीआक्सिडेन्ट्स तथा अमीनों अम्ल पाये जाते हैं। संहजना की पत्तियों को छाया में

सुखाकर, पीसकर चूर्ण तैयार कर इस चूर्ण को संरक्षित करके सूप, सॉस एवं सब्जियों में उपयोग करने से इनकी पौष्टिकता कई गुणा बढ़ जाती है। इसकी पत्तियों से सॉस भी बनाया जा सकता है। कुपोषण प्रभावित क्षेत्र में इसका चूर्ण भोजन के साथ खिलाने से व्यक्ति कुपोषण से मुक्ति पा सकते हैं। फूलों से चटनी एवं सब्जी बनाई जाती हैं।

#### **जड़:—**

जब पौधा 2 फीट का हा जाये तो उसे उखाड़कर जड़ को मसाले के रूप में काम लिया जाता है। इसकी जड़ का स्वाद तीखापन लिये होता है। जड़ को मसाले के लिए उपयोग में लेने से पहले इसकी छाल हटा देनी चाहिए क्योंकि इसमें मोरिन्जिनाइन नामक पदार्थ होता है जो जहरीला होता है। सेंजना की जड़ का अधिक सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि इसमें एक एल्केलॉइड स्पाइरोचिन होता है जो कि नर्व पैरालाइजेंट के लिए उत्तरदायी होता है। जड़ में टेरिगोस्पर्मिन नामक जीवाणुनाशक तत्व पाया जाता है। जड़ का उपयोग त्वचा के संक्रमण का उपचार करने के लिए औषधी के रूप में किया जाता है।

#### **बीज:—**

सेंजना के बीजों को पीसकर पाउडर बनाकर पानी में डालने से पानी साफ हो जाता है। तालाबों, नदीयों, कुओं इत्यादि के पानी को स्वच्छ करने के लिए पानी को सेंजना के बीजों द्वारा उपचारित किया जाता है। बीजों का पाउडर स्कन्दन (कोगुलेंट) के रूप में काम में लिया जाता है जो त्वचा संक्रमण, शहद एवं चीनी का शुद्धिकरण तथा जीवाणुओं एवं ठोस पदार्थों को पानी से अलग करने में उपयोग किया जाता है। इसके बीजों में 36 प्रतिशत तेल पाया जाता है। तेल सौंदर्य प्रसाधनों तथा मशीनों में चिकनाहट के लिए किया जाता है तथा इसकी खली को उर्वरक के रूप में मृदा में मिलाया जाता है।

## गोंद:-

इसका गोंद उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जिसका उपयोग रंगार्ई-छपाई उद्योगों तथा औषधी बनाने में किया जाता है। सेंजना से गोंद अप्रैल-मई में प्राप्त किया जाता है। गोंद का रंग भूरा-लाल होता है।

## सेंजना का होम्योपैथिक उपयोग:-

आमवात, कटिशूल, श्वास-कास एवं प्लीहाशोथ में इसकी फलियों एवं फूलों का सालन तथा फलियों को सिरका में डालकर उपयोग कराया जाता है। छाल एवं पत्तियों का लेप विदाही, शोथहर एवं विद्रधिपाचन होता है। बीजों का तेल वेदनास्थापन तथा शोथहर होता है।

## अन्य उपयोग:-

सेंजना की पत्तियों एवं नई शाखाओं से कम्पोस्ट तैयार कर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सकती है। चाय एवं कॉफी बागानों में पौधों की वृद्धि को बढ़ाने के लिए सेंजना से प्राप्त वृद्धि हार्मोन का बागानों में छिड़काव किया जाता है। टंड या सर्दी से बचने के लिए सेंजना के फूलों की चाय बनाकर पीना लाभदायक होता है। इसके अतिरिक्त तने से ईधन और कागज व टहनियों से रेशा प्राप्त किया जाता है।

## सारणी:1 सेंजना की फलीयों में पाये जाने वाले पोषक तत्वों का मिश्रण

क्र.स.	पोषक तत्वों का नाम	मात्रा
1	विटामिन 'सी'	120मिली ग्राम
2	कैरोटीन	110 मिली ग्राम
3	फॉसफोरस	110 मिली ग्राम
4	मैग्निशियम	28 मिली ग्राम
5	पोटेशियम	259 मिली ग्राम
6	सल्फर	137 मिली ग्राम

7	क्लोरीन	423 मिली ग्राम
8		

### सेंजना की उन्नत किस्में:-

सेंजना की उन्नत किस्मे कृषि विश्व विद्यालयों, अनुसंधान केन्द्रों, आई.सी.ए.आर. अनुसंधान केन्द्रों आदि द्वारा विकसित की गईं जिनकी उत्पादन क्षमता, पकाव अवधि, गुणता आदि की बातें ध्यान में रखने के लिए उन्नत किस्मों का विकास किया जो लाभदायक होती हैं। उन्नत किस्मों में निम्न किस्में हैं जो अधिक उत्पादन देती हैं।

### जाफना मोरीगां:-

यह एक बहुवर्षीय अधिक उत्पादन देने वाली किस्म जिसकी फलियों की औसत लम्बाई 60 से 90 से.मी. होती है। फलियाँ मुलायम व ताजा होती तथा फलियों का रंग हरा होता है। प्रति पौधा 350-400 फलियाँ प्रतिवर्ष प्राप्त होती हैं।

### चैवाकाचेरी मुरींगा:-

यह एक बहुवर्षीय सेंजना की किस्म है जो वर्ष भर फलियाँ देती है। इसकी फलियों की लम्बाई 90 से 100 से.मी. होती है। इनकी फलियाँ अचार बनाने के लिए अधिक उपयुक्त मानी जाती है। फलियों में अधिक गुदा होता है जो स्वादिष्ट होता है।

### चैमुरींगा:-

इस किस्म के पौधे 6 महीने से ही फलियाँ देने लग जाते हैं। फलियों की लम्बाई 65 से 85 से.मी. की होती है। तथा इनमें मिठास लिये हुये हल्का कसिला होता है। फलियों का रंग हल्का लाल होता है।

### येजपानाम मुरींगा:-

इस किस्म की फलियों का रंग गहरा हरा होता है। फलियों की लम्बाई 60 से 90 से.मी. तथा मोटी, मुलायम और स्वादिष्ट होती है। पौधों का आकार अधिक फैलाव वाला होता है। इसकी पत्तियाँ पशुओं के चारे के लिए बहुत उपयोगी व पौष्टिक होती है। इसके फूलों से चटनी अत्यधिक स्वादिष्ट होती है।

### पाल मुरंगई:-

इस किस्म के पौधे 6 महीने की आयु में फलियाँ देने लग जाते हैं। फलियाँ लम्बी व पतली अधिक स्वादिष्ट होती है। प्रति पौधा फलियाँ 350-400 प्रतिवर्ष उत्पादन देती है।

### सी.ओ. 1:-

यह किस्म तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर से निकाली गई है। इसके पौधे बीज व कटिंग द्वारा आसानी से तैयार किये जा सकते हैं। यह किस्म 6 महीने से फूल, फलियाँ देने लग जाती है। इसकी प्रति पौधा उपज 450-600 फलियों का प्रतिवर्ष उत्पादन होता है। फलियाँ मुलायम व स्वादिष्ट होती है। इसकी फलियों से अचार व चटनी उत्तम क्वालिटी की बनती है। सब्जी के रूप में इसकी फलियों का अधिक उपयोग लिया जाता है।

### पी.के.एम.-1:-

यह किस्म बीज द्वारा प्रसारित की गयी है। इस किस्म को उद्यान अनुसंधान केन्द्र, (तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय), पैरीयाकुलाम द्वारा विकसित की गयी। पौधे की ऊँचाई 4-6 मीटर होती है। इस किस्म में फूल 90-100 दिन बाद में पौध रोपण के पश्चात आते हैं। प्रथम बार फलियों की तुड़ाई पौध रोपण के 160 से 170 दिन बाद करनी चाहिए। प्रति पौधा प्रतिवर्ष 200-225 फलियाँ प्राप्त होती हैं। फलियों की लम्बाई 65-70 से.मी., 6.3 से.मी. मोटी एवं 150 ग्राम वजन होता है।

## पी.के.एम. 2:—

यह किस्म बीज द्वारा प्रसारित की गयी हैं। इस किस्म को उद्यान अनुसंधान केन्द्र, (तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय), पैरीयाकुलाम द्वारा विकसित की गयी। इसकी फलियों की लम्बाई 125–130 से.मी. जो अधिक मुलायम व स्वादिष्ट होती है। यह किस्म अधिक घरेलू उपयोग के काम आती है।

## धनराज:—

यह एक बहुवर्षय सेंजना किस्म जो बीज द्वारा उगाई जाती हैं। फलियाँ लम्बी व हरे रंग की होती है। औसत वार्षिक उत्पादन प्रति पौधा प्रतिवर्ष 400–600 फलियाँ प्राप्त होती है। इसकी फलियाँ आचार बनाने के लिए काम आती हैं।

## जलवायु एवं मृदा:—

सेंजना की खेती शुष्क व गर्म जलवायु में आसानी से होती हैं। पौधों की बढ़वार के लिए 25–30° सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है। अधिक धूप व गर्म वातावरण इसके लिए उपयुक्त माना जाता है। सेंजना उत्पादन के लिये विशेष प्रकार की मृदा की आवश्यकता नहीं होती। सेंजना बलूई, चिकनी, अम्लीय सभी प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है। इसमें 21 मिली. मोहज् प्रति सेमी तक लवणता तथा पी.एच. मान 6.0 से 6.7 सहन करने उपयुक्त होता है। इसकी खेती बंजर भूमि पर भी आसानी से की जा सकती है। सेंजना के लिए कम उपजाऊ भूमि भी अधिक उपयुक्त मानी जाती है।

## प्रवर्धन:—

सेंजना के पौधे कलम या बीज द्वारा उगाये जाते हैं। कलम द्वारा तैयार पौधे, गुण वाले होते हैं। सेंजना की कलम 80 से 100 से.मी. लम्बी व 5 से 8 से.मी. मोटी कलम उपयुक्त रहती है। कलम को आई.बी.ए. के 1000 पी.पी.एम के घोल में डुबो कर लगाने से अच्छी सफलता मिलती है। इसके उन्नत बीजों द्वारा नया पौधा तैयार किया जा सकता है। बीजों को थैलियों में बीचों बीच डालकर उगाया जाता है। इसके बीजों का अंकुरण एक सप्ताह में हो



जाता है। जब पौध एक महीने की हो जाय उस वक्त पौधों को खेतों में लगा देना चाहिए। पौधों को जुलाई-अगस्त में जब मानसून चालू हो उस समय लगाना चाहिए।

### **खेत की तैयारी:-**

संजना का बगीचा लगाते समय खेत को 3-4 बार तवा हल से जुताई करनी चाहिए उसके बाद खेत को समतल कर लेना चाहिए। संजना के खेत में पौधें लगाने के बाद पानी का भराव नहीं होना चाहिए यदि ऐसा हैं। तो जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। जब खेत पूर्ण रूप से तैयार हो जाय उसके बाद निश्चित दूरी पर पौधों को लगाना चाहिए।

### **पौध लगाना:-**

संजना के पौधे जुलाई-सितम्बर में लगाने चाहिए क्योंकि उस समय तक उसी वर्ष में अक्टूम्बर-नवम्बर में बोये गए बीजों से पौधे रोपाई योग्य हो जाते है। कलिकायन विधि से तैयार पौधो को भी सितम्बर में लगा सकते है। पौधो व कतारों के बीच की दूरी 6 मीटर रखकर वर्गाकार विधि से क्षेत्र का रेखांकन कर लेना चाहिए। निर्धारित स्थान पर खूंटिया गाड़ कर 45x45x45 सें.मी. आकार के गड्ढे खोदकर तैयार कर लेना चाहिए। यह कार्य मई-जून में करना चाहिये। खोदे गए गड्ढों की ऊपरी मिट्टी में 20 किलो गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट मिलाकर पुनः भर देना चाहिए। अगर दीमक की आशंका हो तो मिट्टी व खाद के मिश्रण में 100 ग्रीम क्यूनालफॉस (1-5 प्रतिशत चूर्ण) दवा भी मिला देनी चाहिए। गड्ढों की वापिस भराई के पश्चात सभी गड्ढों के केन्द्र बिन्दु पर लकड़ी या लोहे की खूंटी गाड़ दे ताकि पौधे लगाने का केन्द्र बिन्दू ध्यान में रहें। जुलाई-अगस्त में एक दो वर्षा होने के बाद इसमें पौधों की रोपाई कर नियमित सिंचाई करते रहना चाहिए।

### **छंटाई व कटाई:-**

संजना में कटाई-छटाई प्रति वर्ष अक्टूम्बर-नवम्बर में करनी चाहिए तथा कटाई छटाई करते समय ध्यान रहे कि पौधे को गोलाई आकार देना चाहिए। परन्तु शुरु के दो सालों में इसे एक मजबूत शाखाओं की संतुलित वृद्धि के लिए छटाई करना आवश्यक होता है। छंटाई

करते समय एक दूसरे से ऊपर से गुजरने वाली तथा नीचे की ओर झुकी हुई शाखाओं को धारदार सिकेटियर से कटाई कर देनी चाहिए। इसी तरह सूखी हुई टहनियाँ तथा रोगग्रस्त शाखाओं को समय-समय पर काटते रहना चाहिए।

### **सिंचाई:—**

पौधों की रोपाई के प्रथम चार से छः माह में नियमित रूप से सर्दियों में 15 दिन तथा गर्मियों में 7-10 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिए। जब पौधे 6 माह के हो जाए तब उनमें फलीयाँ बनना शुरू हो जाती है।

### **संजना के साथ अन्तराशस फसतें:—**

संजना के साथ दूसरे पौधें जैसे संजना-ग्वारपाठा, संजना-सीताफल, संजना-ऑवला, संजना-धामन घास, संजना-मेंहदीं और संजना-बेर आदी फलदार वृक्षों को लगा कर दौहरा लाभ मिलता है। ग्वारपाठा के साथ संजना लगाने पर भूमि कटाव व मृदा नमी बनी रहती है। जिससे संजना में अधिक फूल व फलियाँ लगती है।

### **खाद एवं उर्वरक:—**

संजनो में खाद व उर्वरको की मात्रा पर ज्यादा अनुसंधान नहीं हुआ है फिर भी अच्छी वानस्पतिक बढवार के लिए जब पौधें 75 सें.मी. ऊँचाई हो जाए उस समय 100 ग्राम यूरिया, 100 ग्राम सुपर फॉस्फेट तथा 50 ग्राम म्युरेट ऑफ पोटास प्रति पौधा देना चाहिए उसके बाद सिंचाई कर देना चाहिए। पौधों की कटाई-छटाई के उपरान्त खाद व उर्वरकों की संतुलित मात्रा अवश्य देनी चाहिए।

### **रोग व कीट:—**

संजना में रोग व कीटों से बहुत ज्यादा नुकसान होता है। पौधो की शाखाओं, पत्तियों व छाल को कीड़े अधिक नुकसान पहुचाते है। संजना के पौधों को हानी पहुचाने वाले कीड़ें

जैसे— मोरिंगा हैयर सूण्डी, मोरिंगा बडवर्म, पत्तिभक्षक सूण्डी, फली भेंदक मक्खि और छाल भक्षक सूण्डी आदी कीड़े अधिक नुकसान पहुँचाते हैं।

### **मोरिंगा हैयर सूण्डी:—**

यह कीट छाल, पत्तियाँ, फूलों व कोमल शाखाओं को अधिक नुकसान पहुँचाता है। इसकी रोकथाम के लिए क्लोरोपायरीफॉस (20 ई.सी.) 2 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए। इसके साथ यदी सम्भव होती नीम आधारित दवा का स्प्रे पौधों पर करना चाहिए।

### **मोरिंगा बड वर्म:—**

यह कीट पौधों की मुलायम नयी निकली शाखाओं को खाता है। इससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है जिससे उत्पादन पर भारी प्रभाव पड़ता है। इस कीट के नियन्त्रण के लिए क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 2 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए। इसके अलावा फैनवलरेट 0.4 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से पौधों के चारों तरफ व तने पर भुरकाव करें।

### **पत्तिभक्षक सूण्डी:—**

इस कीट की सूण्डी सबसे ज्यादा पौधों को नुकसान पहुँचाती है। यह सूण्डी रात के समय पौधों की पत्तियों व छाल को खता है। इसके प्रकोप से पत्तियों की सतह पर छलनी जैसे छिद्र हो जाते हैं। जिससे पौधे की बढ़वार रुक जाती है तथा पौधों में फलियाँ व फूल कम लगते हैं। इसका प्रकोप वर्षा के समय अधिक होता है जब खरपावार अधिक मात्रा में हो तथा पौधों का थाला साफ नहीं हो उस वक्त दिन के समय में ये सूण्डीयां घास में छुप जाती है और रात को निकलकर पौधों को हानी पहुँचाती है। इसकी रोकथाम के लिए मैलाथियान 5 प्रतिशत या मिथाईल पैराथियान 2 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या कारबोरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 20 से 25 किलो प्रति हैक्टर भुरकें।

### उपज व तुड़ाई उपरान्त प्रबंधन:-

फलीयों की तुड़ाई सुबह के समय ही करनी चाहिए। तुड़ाई के बाद फलियों को समान आकार के बंडलों में बांधकर व श्रेणीकरण करके मण्डी में बैचना चाहिए जिससे फलियों से अधिक आय प्राप्त होती है। सेंजना की फलियों की उपज 400-500 फलियाँ प्रति पौधा प्राप्त होती है।

### सेंजना की फसल से लाभ लागत:-

सेंजना की फलीयों, फूलों, पत्तियों को उचित समय पर तुड़ाई करके उन्हे बाजार में बेचने के लिए भेज देना चाहिए। फलीयों को एक साथ बन्डल बनाकर व श्रेणीकरण करके बेचने पर अधिक लाभ कमाया जा सकता है। सारणी 2 में दर्शाये अनुसार सेंजना से एक हैक्टर में शुद्ध लाभ लगभग 43250 रुपये का शुद्ध लाभ कमाया जा सकता है।

**सारणी 2 एक हैक्टर में सेंजना का बगीचा स्थापित करने की लागत व लाभ (रुपये) आकलित प्रति हैक्टर 275 पौधों पर होने वाला खर्चा (रुपये)**

क्र. सं.	विवरण	रुपये
<b>अ</b>	<b>लागत व्यय</b>	
1	भूमि की तैयारी	2000
2	गड्डों की खुदाई व भराई (275 गड्डें, 30 रु. / गड्डा)	8250
3	रोपण सामग्री (275 पौधें, 10रु./प्रति पौधा)	2750
4	खाद व उर्वरक	5500
5	पौध संरक्षण	9500
6	सिंचाई	10500
7	अन्तःकर्षण क्रियायें	4000
8	अन्य व्यय (जैसे कटाई छटाई तुड़ाईकी तुड़ाई)	5000
9	<b>कुल लागत</b>	<b>47500</b>
<b>ब</b>	<b>सेंजना की फसल से उपज एवं आय/हैक्टर</b>	
1	फलीयाँ प्रति पौधा 450 ( 55 कि.ग्रा.) x 30	1650
2	फलीयाँ, पत्तियाँ कि.ग्रा. प्रति हैक्टर (55 x 1650 / -)	90750
3	कुल आय (औसतन 30 रु. प्रति कि.ग्रा.)	

4	शुद्ध आय रुपये	43250
5	लाभ लागत अनुपात	2.9